LOOK n LEARN

जैन ऐजुकेशन बोर्ड प्रस्तुति

उदयन वासवदत्ता

Rs. 20.00

Vol 20

युवा हृदय सम्राट पूज्य गुरुदेव श्री नम्रमुनिजी म.सा. की प्रेरणा...

अर्हम युवा ग्रुप

ARHAM YUVA GROUP

पस्ती द्वारा परोपकार के कार्य...

एक नया प्रयोग...

ARHAM YUVA GROUP

करुणा के सागर पूज्य गुरुदेव... जिनके हृदय में दूसरों के हित, श्रेय और कल्याण की भावना रही है... उनके चिंतन से एक अभिनव विचार का सृजन हुआ और उन्होने मानवसेवा, जीवदया के कार्य के साथ अध्यात्म साधना करने के लिए ''अर्हम युवा ग्रुप'' की स्थापना की..!

पूज्य गुरुदेव के प्यार से प्रेरणा पाकर यह महा अभियान समस्त मुंबई के युवक-युवतीओं का एक मिशन बन गया ! इस महा अभियान में प्रतिदिन स्वेच्छा से नये नये युवक युवतियाँ जुडते जा रहे हैं। यह उत्साही युवावर्ग हर माह हजारों किलो की पस्ती एकत्र करके उसका विक्रय करता है और उस राशी से परोपकार के कार्य करता है ।

पूज्य गुरुदेव के मार्गदर्शन और निर्देशन के अनुसार ये युवक-युवतीयाँ हर माह के प्रथम रविवार को पार्टी, पिक्चर या प्रमाद करने के स्थान पर परमात्मा पार्श्वनाथ की जप साधना करके मनकी शांति और समाधि प्राप्त करते हैं।

दूसरे रविवार को सेवा का कार्य करने के लिए घर-घर जाकर अखबारों की पस्ती इकट्ठी करते हैं और कड़वे-मीठे अनुभव द्वारा अपने अहम् को चूर कर, Ego को Go कर, सहनशील और विनम्र बनते हैं ।

तीसरे रविवार को पस्ती से पाये गये रूपयो से गरीब, आदिवासी, बीमार, अपंग, अंधे, वृद्ध आदि की जरूरत पूरी करते है । वे उन्हें केवल वस्तुयें या अनाज, दवा आदि ही नहीं देते अपितु उन्हें प्यार, सांत्वना आश्वासन और आदर भी देते हैं । उनकी दर्दभरी बातें सुनते हैं, अनाथ बच्चों के साथ खेलते हैं और वृद्धजनों को व्हीलचेर पर बैठाकर उनकी इच्छानुसार प्रभु दर्शन आदि कराने भी ले जाते हैं । वे कत्लखाने जाते हुए पशुओं को बचाते हैं । बीमार, घायल पशु-पक्षीयों का इलाज भी कराते हैं ।

बदले में उन्हें क्या मिलता है ? उन्हें एक प्रकार का आत्मसंतोष प्राप्त होता है । वे जो अनुभव करते हैं उसके लिए कोइ शब्द ही नही है । उनका दिल अनुकंपा से भर उठता है।

इन युवाओं ने आजतक दुनिया के सिक्के का सिर्फ एक ही पहलू-सुख ही देखा था। अब सिक्के का दूसरा पहलू दुनिया का दुःख, वास्तविकता देखने के बाद उन्हें अपना सुख अनंत गुना बड़ा लगने लगा है ।

बस ! पूज्य गुरुदेव ने आज की युवा पीढ़ी को शब्दों द्वारा समझाने के बदले प्रयोग द्वारा उनका जीवन परिवर्तन कर दिया । प्रयोग और प्रत्यक्ष देखने और अनुभूति करने के बाद समझाने की जरूरत ही नहीं रही।

चौथे रविवार को अपने पूज्य गुरुदेव के दर्शन करके, उनके सानिध्यमें उनके शुक्ल परमाणुओं द्वारा अपनी ओरा, अपने भाव और अपने विचारों को शुद्ध करके शांतिपूर्ण, निर्विघ्न अपने सारे कार्य सफल करतें हैं और नया मार्गदर्शन... नया बोध... नये विचार पाकर अपना जीवन धन्य बनाते हैं ।

आप भी जीवन में 'गुरु' द्वारा प्रेरणा पाकर परोपकार के इस महा अभियान में अपना सहयोग देवें और अपना अमूल्य मानव जीवन सफल बनायें।

अर्हम ग्रुप के सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें -

Ritesh - 9869257089, Chetan - 9821106360, Jai - 9820155598

हमारा संदेश...

ज्ञान... ज्ञान के बिना जीवन अधूरा है ।

बच्चों के लिए ज्ञान प्राप्ति का सरल माध्यम है आकर्षक और रंगीन चित्र... बच्चे जो देखते हैं वही उनके मानस मे अंकित हो जाता है और लम्बे अर्से तक याद भी रहता है ।

दूसरी बात... आज के Fast युग में बच्चों के पास पढ़ाई के अलावा इतनी साईड एक्टीवीटी है कि उन्हें लम्बी कहानियाँ और बड़ी बड़ी पुस्तकें पढ़ने का समय ही नहीं है ।

हमारे जैनधर्म मे... भगवान महावीर के आगमशास्त्रो में ज्ञान का विशाल भंडार भरा हुआ है । ज्ञाताधर्मकथा सूत्र जैसे आगम में कथानक के रूप में भी कहानियों का खजाना है ।

बाल मनोविज्ञान की जानकारी से हमे ज्ञात हुआ कि बच्चों की रूचि Comics में ज्यादा है । उन्हें पंचतंत्र, रीचीरीच, आर्ची, Tinkle आदि Comics ज्यादा पसंद है और उसे वे दो-चार - पाँच बार भी पढ़ते है और Comics एक ऐसा Addiction है जिसे बड़े भी एक बार अवश्य पढ़ते है । यही विषय पर चिंतन-मनन करते हुए हमारे मानस में भी एक विचार आया... क्यों न हम भी जैनधर्म के ज्ञान को... हमारे भगवान महावीर के जीवन को, हमारे तीर्थंकर को... बच्चों तक पहुँचाने के लिए Comics Book का माध्यम पसंद करे...?

शायद यही माध्यम से बच्चों और बच्चों के साथ बड़े भी जैनधर्म के ज्ञान-विज्ञान की जानकारी पाकर अपने आप में कुछ परिवर्तन लायेंगे ।

परमात्मा के विशाल ज्ञान सागर में से यदि हम कुछ बूंदे भी लोगों तक पहुँचाने में सफल हुए तो हमारा यह प्रयास यथार्थ है ।

जैनधर्म की क्षमा, वीरता, साहस, मैत्री, वैराग्य, बुद्धि, चातुर्य आदि विषयों की शिक्षाप्रद कहानियाँ भावनात्मक रंगीन चित्रों के माध्यम द्वारा प्रकाशित करने का सदभाग्य ही हमारी प्रसन्नता है ।

यह Comics हमारे Jain Education Board - Look n Learn के अंतर्गत प्रकाशित हो रही है ।

प्रस्तावना

वैर से वैर शान्त नहीं होता। शत्रु खत्म हो जाते हैं, शत्रुता पीढी-दर-पीढी चलती रहती है। वैर और शत्रुता को समाप्त करने के लिए प्रेम, सद्भाव और विनम्रता की शक्ति चाहिए। उदयन और वासवदत्ता का चरित्र इसी शाश्वत सत्य को प्रकट करता है।

कौशाम्बी नरेश शतानीक और उज्जयिनीपति चंडप्रद्योत परस्पर साढू के रिश्ते से जुड़े थे परन्तु फिर भी चंडप्रद्योत की राज्यलिप्सा और विषयतृष्णा के कारण दोनों में परस्पर शत्रुता हो गई और चंडप्रद्योत ने कौशाम्बी का विध्वंस करने की ठान ली। किंतु रानी मृगावती की दूरदर्शिता, समयज्ञता और शान्ति तथा प्रेम की शक्ति ने चंडप्रद्योत का हृदय बदल दिया।

उदयन के समय में पुनः चंडप्रद्योत कौशाम्बी को नष्ट करने तैयार हो गया, किंतु उदयन और वासवदत्ता ने दोनों राज्यों की इस शत्रुता को प्रेम की धारा से सदा-सदा के लिए शांत कर दिया।

उदयन का चरित्र त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र में है तथा हिन्दू तथा बौद्ध कवियों ने भी इस पर काव्य, नाटक आदि की रचना की है। महाकवि भास का 'स्वप्न वासवदत्ता' नाटक भी प्रसिद्ध है।

प्रस्तुत चित्रकथा में जैन ग्रंथों के अनुसार **उदयन और वासवदत्ता** चरित्र का चित्रण किया गया है।

प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान

मूल्य : २०/- रु.

Look n Learn

Jain Education Board

PARASDHAM

Vallabh Baug Lane, Tilak Road, Ghatkopar (E), Mumbai - 400 077. Tel : 32043232.

उदयन और वासवदत्ता
भारत के प्राचीन वज्जि गणतंत्र की राजधानी थी वैशाली। वैशाली नरेश चेटक के सात पुत्रियाँ थीं। तीसरी पुत्री मृगावती का विवाह कौशाम्बी पति शतानीक के साथ हुआ। रानी मृगावती उस युग की परम सुन्दरी मानी जाती थी। पाँचवी पुत्री शिवादेवी अवन्ती के राजा चण्डप्रद्योत की रानी थी।
एक दिन चण्डप्रद्योत की सभा में एक चित्रकार आया। उसने एक कलाकृति चण्डप्रद्योत को भेंट दी।
वाह ! क्या अद्भुत चित्र है। चित्रकार तुम्हारी कल्पना का जबाव नहीं।
महाराज, यह कल्पना नहीं सच है।
क्या ऐसी अपूर्व सुन्दरी धरती पर है?
अवश्य महाराज।
कौन है यह सुन्दरी? कहाँ की शोभा है?
कौशाम्बीपति शतानीक की रानी मृगावती का है यह चित्र।
ओह ! मृगावती ! उसके अद्भुत लावण्य की चर्चा सुनी तो हमने भी है, पर विश्वास नहीं हुआ।

चित्र को बहुत देर देखने के बाद चण्डप्रद्योत ने अपने महामंत्री से कहा–
अमात्यवर ! पृथ्वी का यह सर्वश्रेष्ठ नारीरत्न तो हमारे महलों में होना चाहिए।
महामंत्री चकित होकर राजा की ओर देखने लगा।
परन्तु महाराज, राजा शतनीक तो आपके साढ़ू हैं न?
चण्डमहासेन जिस वस्तु को चाहता है, उसमें रिश्ते नाते बाधा नहीं बन सकते।
चण्डप्रद्योत की बात सुनकर सभी एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। राजा ने सामने आसन पर बैठे दूत को पुकारा–
वज्रजंघ ! तुम कौशाम्बी जाकर महाराज शतानीक से हमारा सन्देश कहो कि हम महारानी मृगावती को चाहते हैं। इसलिए वह हमें भेंट कर दे। बदले में जो चाहिए माँग ले।
महाराज की जैसी आज्ञा।
वज्रजंघ कौशाम्बी की ओर चल.पड़ा।
लगभग चार दिन के प्रवास के बाद दूत कौशाम्बी की राजसभा में पहुँचा और राजा शतानीक को चण्डप्रद्योत का सन्देश सुनाया। सन्देश सुनते ही शतानीक क्रोध से भर उठे। बोले–
इस धृष्टता के लिए हम तुम्हारा सिर उड़ा सकते हैं, परन्तु दूत अवध्य होता है, इसलिए क्षमा करते हैं। फिर भी इसका फल तुम्हें अवश्य मिलेगा।
फिर पहरेदारों ने दूत की अच्छी तरह पिटाई की और धक्के देकर राजसभा से निकाल दिया।

फटे कपड़े, घायल हालत में दूत अवन्ती की राजसभा में वापस पहुँचा और चण्डप्रद्योत को पूरी घटना सुना दी।
उन कायरों की इतनी हिम्मत। मेरे दूत की पिटाई कर दी।
चण्डप्रद्योत ने सेनापति को आदेश दिया-
सेनापति कौशाम्बी पर आक्रमण की तैयारी करो।
चण्डप्रद्योत की सेना ने कौशाम्बी को चारों ओर से घेर लिया। भयंकर युद्ध हुआ।
राजा शतानीक सहित हजारों योद्धा वीरगति को प्राप्त हो गये।
कौशाम्बी के मंत्रियों, सेनापतियों ने मिलकर निश्चय किया-
राज्य के गौरव की रक्षा के लिए हम आखिरी दम तक लड़ते रहेंगे।
मंत्रीवर ! देश की रक्षा के लिए आपका निर्णय वीरोचित है, परन्तु प्राण देकर भी यदि हम अपनी रक्षा नहीं कर सके तो?
इस प्रश्न पर सभी मौन रहे और महारानी की तरफ देखने लगे।

महारानी ने कहा-
वीरता के साथ समयज्ञता भी राजनीति का अंग है। हमें दोनों को मिलाकर चलना होगा।
आप जैसा आदेश देंगी, हम करने को तैयार हैं।
रानी मृगावती ने महामंत्री और सेनापति से एकान्त में मंत्रणा की। फिर अपना एक विश्वासी दूत राजा चण्डप्रद्योत के पास भेजा। दूत ने चण्डप्रद्योत के पास पहुँचकर प्रणाम किया और बोला-
महाराज की जय हो ! मैं महारानी मृगावती का खास सन्देश लेकर आया हूँ।
चण्डप्रद्योत ने इधर-उधर देखा। सभी लोग उठकर चले गये। एकान्त देखकर दूत ने कहा-
महाराज ! महारानी मृगावती ने कहलवाया है कि कौशाम्बी की प्रजा अनाथ हो गई है। राजकुमार उदयन अभी पाँच वर्ष का है। अब आप ही हमारे शरणदाता हैं।
यह सुनकर चण्डप्रद्योत का चेहरा खिल उठा।
मुझे विश्वास था महारानी बहुत समझदार है, ऐसा ही सोचेंगी। मैं भी युद्ध नहीं चाहता हूँ।
महारानी ने कहा है, वे अभी महाराज के निधन से बहुत दुःखी हैं। इन घावों को भरने के लिए कुछ समय चाहिए। फिर तो हम आपके ही हैं। जायेंगे कहाँ?

चण्डप्रद्योत मन ही मन बोला–
वाह ! मोर ने पुकारा बादल बरस गया !
उसने तुरन्त सेनापति को बुलाकर आदेश दिया–
युद्ध रोक दो। कोई भी सैनिक कौशाम्बी की एक ईंट को भी नहीं छुएगा।
फिर चण्डप्रद्योत ने दूत से कहा–
महारानी से कहो, मैं हर प्रकार से उनकी रक्षा करूँगा। मुझे न राज्य चाहिए, न ही सम्पत्ति। मैं केवल उनको ही चाहता हूँ।
महाराज ! महारानी जी भी यही सोचती हैं। बस, कुछ समय में सबकुछ सामान्य हो जायेगा।
महारानी जी के लिए हम सबकुछ करने को तैयार हैं। कहें तो कल ही हमारी सेना वापस लौट जायेगी।
दूत ने रानी मृगावती को चण्डप्रद्योत का उत्तर सुनाया। रानी मन ही मन मुस्करायी।
अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे?
अगले दिन रानी का दूत पुनः चण्डप्रद्योत के पास आया–
अवन्तीनाथ के चरणों में महारानी मृगावती का प्रणाम स्वीकार हो।

चण्डप्रद्योत उठकर एकान्त में आ गया। संकेत से दूत को पास बुलाकर पूछा–
महारानी का क्या सन्देश है?
महाराज ! युद्ध में कौशाम्बी के दुर्ग, शस्त्र, सेना आदि सभी कुछ क्षतिग्रस्त हो गया है। आपके यों लौट जाने पर इसे अनाथ समझकर कोई भी शत्रु राजा आक्रमण कर सकता है।
हमारी छत्रछाया में रहे राज्य पर आँख उठाने की हिम्मत किसमें हैं?
महारानी जी यह समझती हैं, परन्तु आप तो बहुत दूर हैं, शत्रु चारों तरफ बैठा है। स्वामीहीन घर में चोरों को घुसते क्या देर लगेगी? सांप घर में बैठा हो तो हिमालय की जड़ी क्या काम आयेगी?
तो महारानी जी क्या चाहती हैं?
आप कौशाम्बी की सुरक्षा व्यवस्था को ऐसी सुदृढ़ बना दीजिए कि शत्रु का कोई दाँव नहीं चले।
चण्डप्रद्योत ने सेनापति को बुलाकर आदेश दिया–
कौशाम्बी के दुर्ग, प्राचीर आदि का पुनः निर्माण कर अभेद्य और सुसज्जित बना दो।
हजारों मजदूर कौशाम्बी के दुर्ग के पुनः निर्माण में जुट गये।

थोड़े समय बाद दुर्ग का कार्य पूर्ण हो गया। महारानी स्वयं निरीक्षण करने निकलीं।
देखिए, महारानी जी ! इस किले की दीवारें उज्जयिनी के सुदृढ़ ईंट-पत्थरों से बनाई गयी हैं। यह भूकम्प से भी नहीं हिल सकतीं। प्राचीरों पर विशाल तोपें सुसज्जित कर दी गई हैं। ये देखिए, नगरद्वार तो सचमुच वज्र कपाट बनाये गये हैं।
सचमुच ! आप लोगों ने इसे अभेद बना दिया।

दूसरे दिन प्रातः चण्डप्रद्योत का दूत रानी मृगावती के पास आया–
महारानी की जय ! महाराज जानना चाहते हैं, आप उनके साथ उज्जयिनी के लिए कब प्रस्थान करेंगी?
महाराज से निवेदन करो, शीघ्र ही सूचित कर दूँगी।

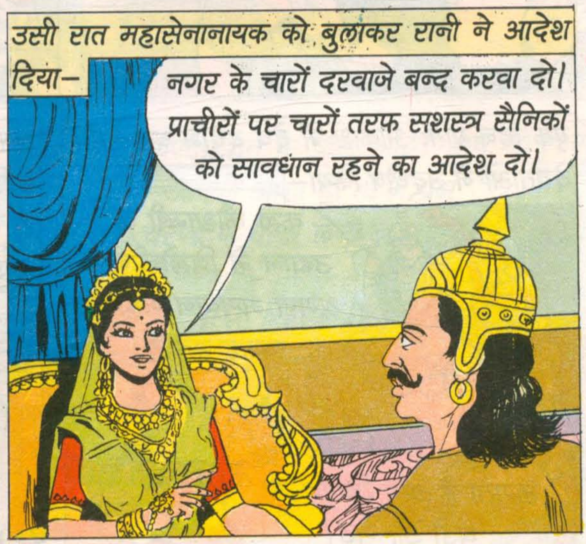
उसी रात महासेनानायक को बुलाकर रानी ने आदेश दिया–
नगर के चारों दरवाजे बन्द करवा दो। प्राचीरों पर चारों तरफ सशस्त्र सैनिकों को सावधान रहने का आदेश दो।

और अगले दिन रानी मृगावती ने चण्डप्रद्योत के पास संदेश पत्र भेजा।
?
राजन् ! सिंहनी कितनी भी असहाय हो जाये कभी गीदड़ के साथ नहीं रह सकती। क्या आप नहीं जानते, क्षत्रियाणी अपने प्राण देखकर भी शील की रक्षा करती है। मृगावती सती शिवादेवी की बहन है, प्राण देकर भी धर्म की रक्षा करेगी।

सन्देश सुनते ही चण्डप्रद्योत के नथूने फूल उठे।
धोखा ! महाछल ! धूर्त मृगावती ने मुझे ही मूर्ख बना दिया। कौशाम्बी पर पुनः आक्रमण करो। ईंट से ईंट बजा दो। चारों तरफ से घेर लो।
अवन्ती की सेना ने पुनः कौशाम्बी को चारों तरफ से घेर लिया। मदोन्मत हाथियों ने दुर्ग के दरवाजों को तोड़ने का भरपूर प्रयास किया। किन्तु कोई द्वार नहीं टूट सका। आखिरी चण्डप्रद्योत की सेना ने ही उस अभेद दुर्ग का निर्माण किया था। चण्डप्रद्योत निराश होकर हाथ मलता रहा।
ओह ! महाछल !
थक हारकर चण्डप्रद्योत की सेना ने दुर्ग के बाहर ही पड़ाव डाल दिया।
एक दिन प्रातः आकाश में देव दुंदुभि बज उठी। देवताओं ने उद्घोष किया—
कल कौशाम्बी के उद्यान में त्रिलोकीनाथ श्रमण भगवान महावीर पधार रहे हैं।
लगता है अब निर्णय की घड़ी आ गई।
अगले दिन प्रातः हजारों नारियों के समूह के साथ एक जैसी सफेद साड़ियाँ पहने, हाथों में सफेद पताका लिये रानी मृगावती नगरद्वार से बाहर निकलकर भगवान के समवसरण की तरफ चल दी। चण्डप्रद्योत हाथ मलता रह गया।
करुणावतार भगवान महावीर की जय !
ओह ! अब मैं इन्हें बन्दी भी नहीं बना सकता।

चण्डप्रद्योत भी भगवान महावीर की देशना सुनने समवसरण में आया। प्रसंग अनुसार भगवान महावीर ने देशना की–
भव्यो ! विषय, तृष्णा के वश हुआ मनुष्य संसार में जन्म-जन्म तक दुःख पाता है। विषयमूढ़ मानव, अंधे की तरह विवेकहीन हो जाता है। नीच से नीच कर्म करने में उसे लाज नहीं आती।
देशना के अन्त में रानी मृगावती ने उठकर प्रार्थना की–
भन्ते ! मैं महाराज चण्डप्रद्योत की आज्ञा लेकर दीक्षा लेना चाहती हूँ।
देवानुप्रिये ! जैसा सुख हो वैसा करो।
मृगावती चण्डप्रद्योत के पास आई। हाथ जोड़कर बोली–
आपकी आज्ञा हो तो मैं प्रभु चरणों में दीक्षा लेना चाहती हूँ।
भगवान की उपस्थिति के प्रभाव से चण्डप्रद्योत का विकार/विरोध शान्त हो गया। वह मौन रहा। रानी ने पुनः कहा–
मेरा पुत्र उदयन अभी बालक है। इसकी और राज्य की रक्षा का भार मैं आपको सौंप रही हूँ।

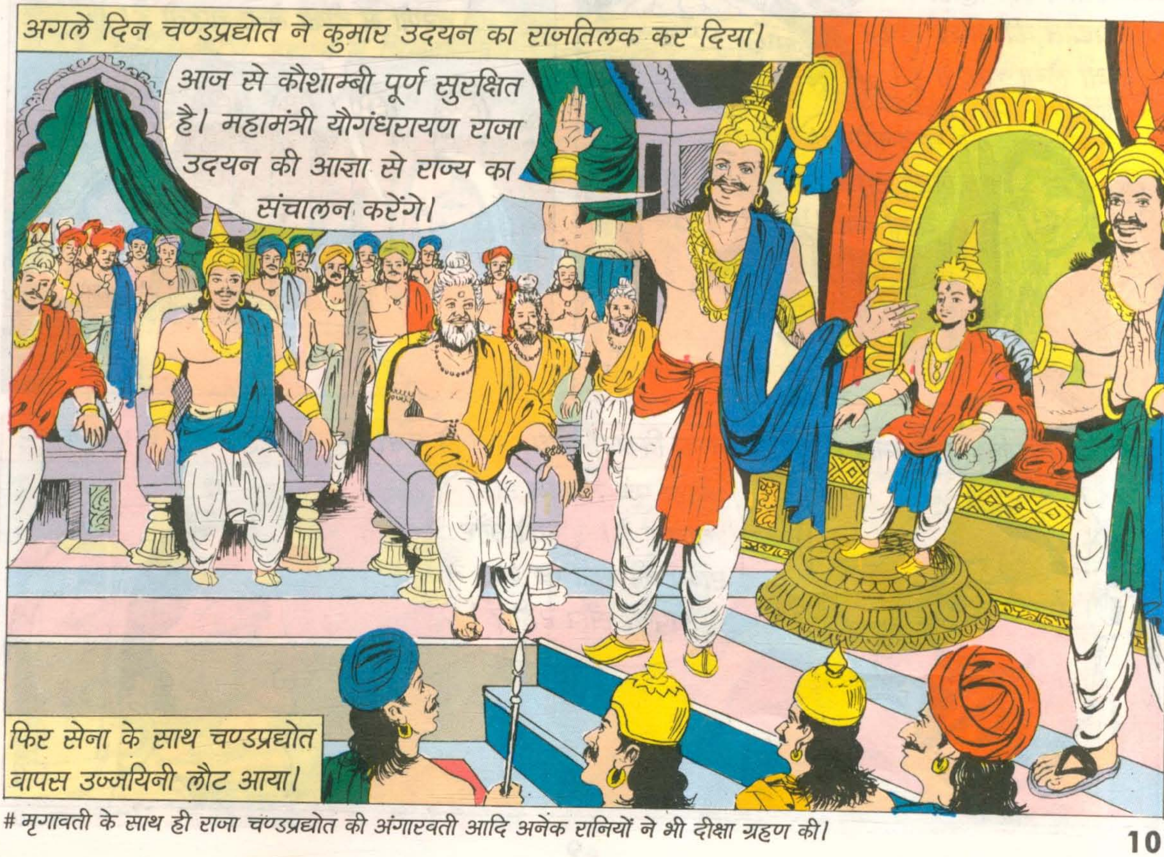

मृगावती के साथ ही राजा चण्डप्रद्योत की अंगारवती आदि अनेक रानियों ने भी दीक्षा ग्रहण की।

रानी अंगारवती की पुत्री थी वासवदत्ता। जब वह तीन वर्ष की थी। तभी माता साध्वी बन गई थी। राजा चण्डप्रद्योत ने ही उसे माँ का प्यार दुलार देकर पाला। वह रूप में अप्सरा जैसी लगती थी। तो बुद्धि और चतुरता में सरस्वती। काव्य नृत्य गायन अनेक विद्याओं में प्रवीण थी वह।

पिताश्री ! जन्मदिन का मुझे यही उपहार दे दीजिए ...... मैं उनसे गंधर्व विद्या सीखना चाहती हूँ।
अवश्य पुत्री ! मैं तेरी सब इच्छाएँ पूरी करता रहा हूँ तो यह भी इच्छा पूर्ण करूँगा।
प्रसन्न होकर वासवदत्ता ने पिताश्री के चरण स्पर्श किये और फिर छाती से लिपट गई।
चण्डप्रद्योत राजसभा में आये। और महामंत्री से कहा–
मंत्रीवर ! राजकुमारी वासवदत्ता उदयन से गंधर्व विद्या सीखना चाहती हैं। हमने वचन दिया है।
महाराज ! यह कोई कठिन काम नहीं है। उदयन भी आपको अपना संरक्षक और पिता तुल्य मानते हैं। उन्हें आदेश देकर बुला सकते हैं।
चण्डप्रद्योत ने पत्र लिखकर दूत को अवन्ती भेज दिया।
दूत ने अवन्ती की राजसभा में पहुँचकर पत्र उदयन को भेंट किया। उदयन ने पत्र महामंत्री यौगंधरायण को देते हुए कहा–
तात ! आप उचित समझें तो पत्र का संदेश सुना दीजिए।

यौगंधरायण ने पत्र पढ़ा और कहा–
महाराज ! हम एकान्त में इस पर विचार करेंगे।
एकान्त कक्ष में यौगंधरायण ने बताया–
महाराज ! अवन्ती की राजसभा आपका सर्वश्रेष्ठ वीणावादन सुनना चाहती है। इसलिए आपको सम्मानपूर्वक अवन्ती पधारने के लिए निमंत्रित किया है।
यह सुनकर मंत्रियों ने कहा–
अवन्ती नरेश तो हमारे स्वजन हैं, वहाँ जाने में क्या आपत्ति है?
चण्डमहासेन हमारे स्वजन तो हैं, परन्तु महाकुटिल भी हैं। चोट खाया सांप विश्वसनीय नहीं होता। इसमें कोई चाल भी हो सकती है।
और हमारे राजा दूसरे राज्यों में जाकर वीणावादन करें, यह भी गौरव की बात नहीं है।
इन सबकी बातें सुनकर उदयन ने कहा–
महामात्य ! आप जैसा भी उचित समझें उत्तर दे दीजिए।

अगले दिन महामंत्री ने पत्र लिखकर दूत को दे दिया। दूत ने वापस उज्जयिनी पहुँचकर चण्डप्रद्योत को पत्र दिया।
आदरणीय, अवन्तीनरेश को सादर प्रणाम, आपका आदरपूर्ण आमंत्रण हमारे लिए प्रसन्नता का विषय है। किन्तु अभी महाराज महत्त्वपूर्ण राजकार्यों में व्यस्त होने से आपका आदेश स्वीकारने में असमर्थ हैं। क्षमा करें।
पत्र पढ़कर चण्डप्रद्योत का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा–
मेरी बिल्ली, मुझसे ही म्याऊँ। ठीक है, चण्ड महासेन भी अपना लक्ष्य साधना जानता है।
उसने तुरन्त अपने रहस्य मंत्री को बुलाकर आदेश दिया–
उदयन को छल से, बल से, किसी भी प्रकार अवन्ती लाना है।
महाराज ! आपकी आज्ञा हो तो हम असंभव को भी संभव कर सकते हैं। यह तो मामूली कार्य है...
रहस्य मंत्री ने तुरन्त योजना बनाकर चण्डप्रद्योत के समक्ष प्रस्तुत की–
बस महाराज, चतुर शिल्पकारों को कल से ही इस काम में लगा देता हूँ। चार मास में हमारी योजना पूर्ण हो जायेगी।
वाह ! बहुत सुन्दर उपाय है। तुरन्त इसे अविलम्ब क्रियान्वित करो।

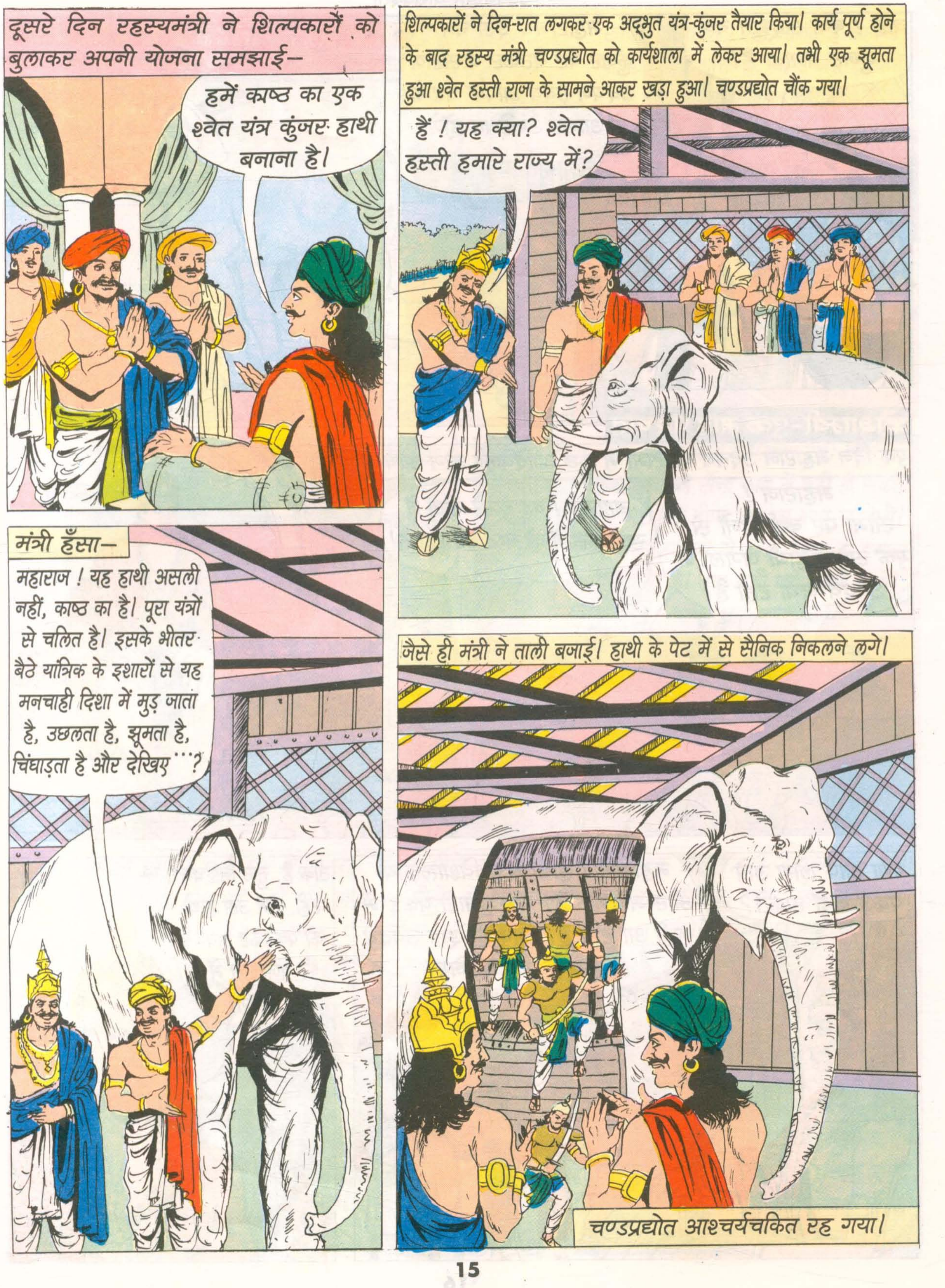

दूसरे दिन रहस्यमंत्री ने शिल्पकारों को बुलाकर अपनी योजना समझाई–
हमें काष्ठ का एक श्वेत यंत्र कुंजर हाथी बनाना है।
शिल्पकारों ने दिन-रात लगकर एक अद्भुत यंत्र-कुंजर तैयार किया। कार्य पूर्ण होने के बाद रहस्य मंत्री चण्डप्रद्योत को कार्यशाला में लेकर आया। तभी एक झूमता हुआ श्वेत हस्ती राजा के सामने आकर खड़ा हुआ। चण्डप्रद्योत चौंक गया।
हैं ! यह क्या? श्वेत हस्ती हमारे राज्य में?
मंत्री हँसा–
महाराज ! यह हाथी असली नहीं, काष्ठ का है। पूरा यंत्रों से चलित है। इसके भीतर बैठे यांत्रिक के इशारों से यह मनचाही दिशा में मुड़ जाता है, उछलता है, झूमता है, चिंघाड़ता है और देखिए ···?
जैसे ही मंत्री ने ताली बजाई। हाथी के पेट में से सैनिक निकलने लगे।
चण्डप्रद्योत आश्चर्यचकित रह गया।

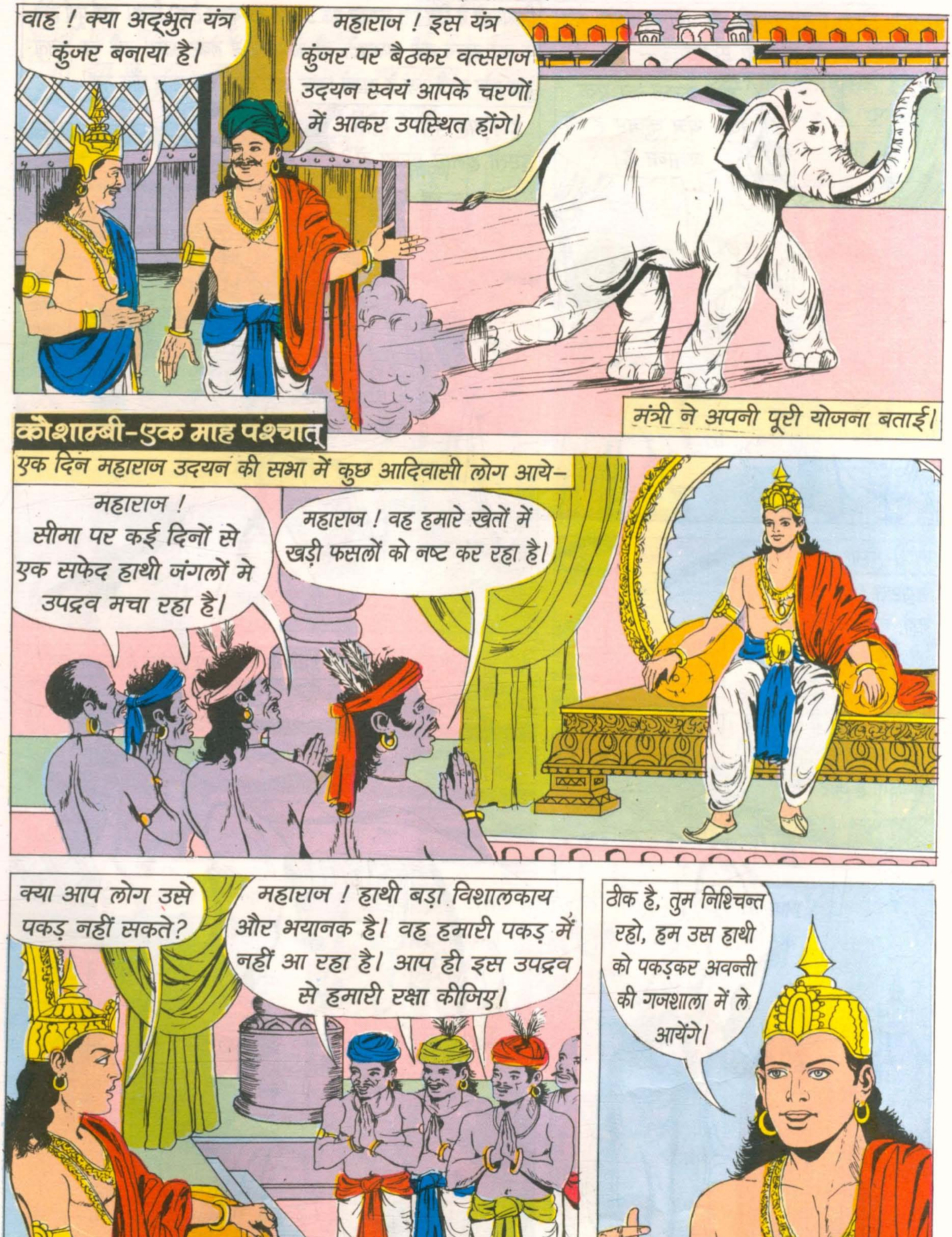
वाह ! क्या अद्भुत यंत्र कुंजर बनाया है।
महाराज ! इस यंत्र कुंजर पर बैठकर वत्सराज उदयन स्वयं आपके चरणों में आकर उपस्थित होंगे।
मंत्री ने अपनी पूरी योजना बताई।
कौशाम्बी-एक माह पश्चात्
एक दिन महाराज उदयन की सभा में कुछ आदिवासी लोग आये-
महाराज ! सीमा पर कई दिनों से एक सफेद हाथी जंगलों मे उपद्रव मचा रहा है।
महाराज ! वह हमारे खेतों में खड़ी फसलों को नष्ट कर रहा है।
क्या आप लोग उसे पकड़ नहीं सकते?
महाराज ! हाथी बड़ा विशालकाय और भयानक है। वह हमारी पकड़ में नहीं आ रहा है। आप ही इस उपद्रव से हमारी रक्षा कीजिए।
ठीक है, तुम निश्चिन्त रहो, हम उस हाथी को पकड़कर अवन्ती की गजशाला में ले आयेंगे।

उदयन ने अपने सहायक वसन्तक को कहा—
वसन्तक ! हमारी घोषवती वीणा लो और चलो, हाथी को वश में करना है।
रुकिये महाराज ! हम मानते हैं आपकी वीणा में वह शक्ति है, जो उन्मत्त हाथियों को राग सुनाकर शान्त कर देती है।

फिर आप चिन्ता क्यों करते हो?
किन्तु महाराज, बिफरा मदोन्मत्त हाथी कभी बड़ा भयानक भी बन जाता है। इसलिए साथ में सेना भी रखनी चाहिए।

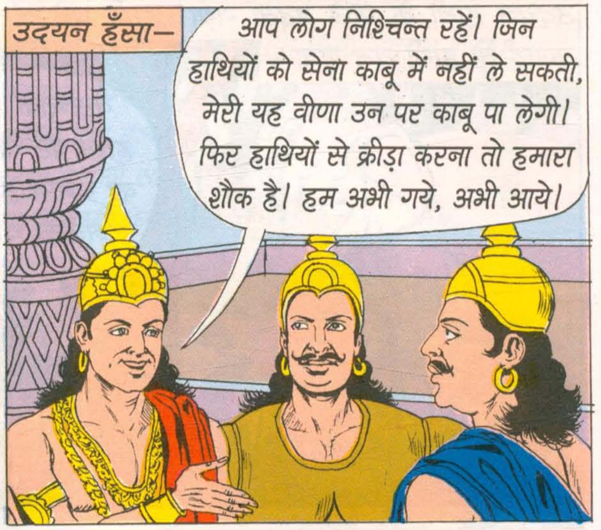
उदयन हँसा—
आप लोग निश्चिन्त रहें। जिन हाथियों को सेना काबू में नहीं ले सकती, मेरी यह वीणा उन पर काबू पा लेगी। फिर हाथियों से क्रीड़ा करना तो हमारा शौक है। हम अभी गये, अभी आये।

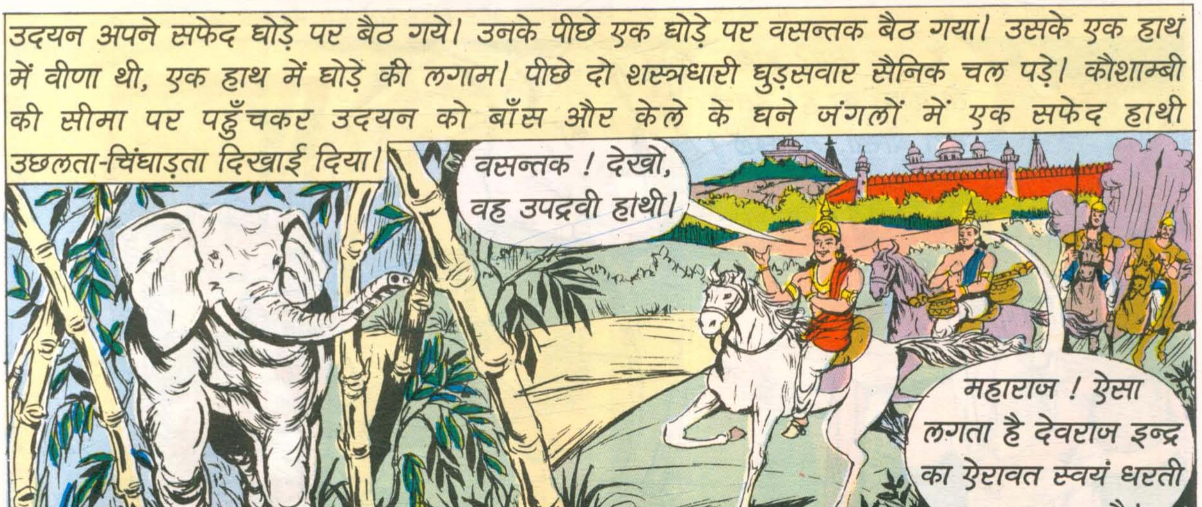
उदयन अपने सफेद घोड़े पर बैठ गये। उनके पीछे एक घोड़े पर वसन्तक बैठ गया। उसके एक हाथ में वीणा थी, एक हाथ में घोड़े की लगाम। पीछे दो शस्त्रधारी घुड़सवार सैनिक चल पड़े। कौशाम्बी की सीमा पर पहुँचकर उदयन को बाँस और केले के घने जंगलों में एक सफेद हाथी उछलता-चिंघाड़ता दिखाई दिया।
वसन्तक ! देखो, वह उपद्रवी हाथी।
महाराज ! ऐसा लगता है देवराज इन्द्र का ऐरावत स्वयं धरती पर आ गया है।

उदयन ने वसन्तक से वीणा लेकर स्वर छेड़े।
चिंघाड़
हाथी ने उदयन को आते देखा तो जोर से चिंघाड़ा और विपरीत दिशा की ओर दौड़ा।
उदयन हाथी के पीछे बढ़ता गया। हाथी घने जंगलों में घुसता गया। उदयन ने फिर छुपकर वीणा बजाई तो हाथी थम गया–
वसन्तक ! लगता है हाथी पर वीणा के स्वरों का प्रभाव हो गया। चलो नजदीक चलकर देखें।
जैसे ही उदयन हाथी के नजदीक पहुँचा। हाथी का पेट खुल गया और धड़धड़ाते हुए सशस्त्र सैनिक निकलने लगे।
हैं, यह क्या? हाथी तो काष्ठ का है। इतना बड़ा धोखा, महाछल !

कुछ ग्रंथों में उसे अँधी बताया है।

हाँ, इसलिए तो मैं उसे हर प्रकार से प्रसन्न रखना चाहता हूँ। तुम उसे गंधर्वविद्या सिखाओ। बस, यही मेरा आग्रह है।
ठीक है मौसाजी, जैसी आपकी आज्ञा।
उदयन से स्वीकृति पाकर चण्डप्रद्योत वासवदत्ता के पास आया।
पुत्री ! तेरे गायन शिक्षण की सब व्यवस्था हो गई है। वसन्तराज उदयन यहाँ आ गये हैं। परन्तु .....
परन्तु क्या पिताश्री?
बेटी ! भाग्य भी कभी-कभी कैसा विचित्र मजाक करता है। भारत का सर्वश्रेष्ठ गंधर्वविद्या प्रवीण, शरीर में कोढ़ी है। कुष्ठ रोग से उसका गला गल रहा है।
हैं ! वत्सराज और कोढ़ी?
हाँ, पुत्री ! यही तो भाग्य की विडम्बना है। किसी भी स्त्री के सामने जाने में उसे बड़ी शर्म आती है। इसलिए मैंने तुम दोनों के बीच एक काला पर्दा डलवा दिया है। ताकि उसे संकोच नहीं होगा और तुम भी कोढ़ी से बचकर रह सकोगी।
दूसरे दिन वासवदत्ता वीणा वादन सीखने लगी। पर्दे के पीछे बैठा उदयन उसे भिन्न-भिन्न प्रकार के राग सिखाता रहा। प्रतिदिन एक पहर तक यह शिक्षण चलता था।

एक दिन उदयन वासवदत्ता को दिव्यराग का शिक्षण दे रहा था।
राजकुमारी ! वीणा का पंचम तार ढीला है। स्वर ठीक लय में नहीं आ रहे।
वासवदत्ता ने तार कस दिया, किन्तु फिर भी वह बार-बार राग गाने में चूक रही थी।
झुंझलाकर उदयन ने कहा–
ए काणी, क्या वीणा के तार ठीक से दिखाई नहीं दे रहे हैं। अभ्यास में जरा मन लगाओ।
काणी का सम्बोधन सुनकर वासवदत्ता गुस्से से भर उठी–
मेरी झील-सी आँखों का सौन्दर्य तुझ कोढ़ी को सुहाया नहीं? जो काणी कहकर तिरस्कार कर रहा है?
कोढ़ी ...? कौन है?
उदयन को लगा कि इसमें भी चण्डमहासेन का कोई प्रपंच है उसने झट से पर्दा खींच दिया। सामने वासवदत्ता को बैठी देख उदयन उसके दिव्य सौन्दर्य को निहारने लगा।
इस अद्वितीय सुन्दरी को काणी क्यों बताया ....?
हैं ! यह साक्षात् कामदेव का अवतार कोढ़ी कहाँ है?

दोनों काफी देर तक एक-दूसरे को एकटक निहारते रहे।
सुन्दरी, हमारे बीच भ्राँति का यह पर्दा तुम्हारे पिताजी ने ही डाला है न?
आर्य, उनको जो भय था वही तो हो गया न।
धीरे-धीरे दोनों में एक-दूसरे का आकर्षण बढ़ता गया और एक दिन उदयन ने कह दिया—
सुन्दरी, मन मिल चुका है तो तन की दूरी कितने दिन रहेगी....?
आर्य, पिताश्री हमें कभी मिलने नहीं देंगे, इसलिए आपको ही कुछ करना होगा।
ठीक है, तुम एक तीव्रगामिनी हथिनी की व्यवस्था करो, बाकी सब मैं करता हूँ।
कुछ दिन बाद वसन्तक भेष बदलकर उदयन से मिलने आया।
वसन्तक तुम यहाँ?
राजन् ! महामंत्री यौगंधरायण भी आये हैं। वे आपको ले जाने की योजना बना रहे हैं।
वसन्तक ! राजकुमारी वासवदत्ता भी मेरे साथ कौशाम्बी चलेगी। महामंत्री से कहो, तैयारी करें।

वसन्तक ने महामंत्री को बताया–
मन्त्रीवर ! राजकुमारी, उदयन से प्यार करने लगी है। वह भी कुमार के साथ चलेगी।
वाह ! नहले पर दहला। चण्ड ने हमारे राजा का अपहरण किया, किन्तु हम दिन दहाड़े डंके की चोट पर उसकी राजकुमारी को ले जायेंगे।

अगले ही दिन से यौगंधरायण एक पागल का स्वांग बनाकर उज्जयिनी के बाजारों में घूमने लगा। खुले बिखरे बाल, फटे कपड़े, चिल्लाता है, कभी रोता है और जोर-जोर से पुकारता है–
मैं कौशाम्बी का अमात्य यौगंधरायण हूँ। चण्डप्रद्योत ने हमारे राजा का अपहरण किया है। मैं उसकी राजकुमारी को उठाकर ले जा रहा हूँ।
भाई ! इसको तो भूत लग गया है।
बकवास कर रहा है। हटो चलो, अपना काम करो।
अरे, यह तो कोई पागल है।

एक दिन चण्डप्रद्योत हाथी पर बैठा नगर बाजार में से गुजर रहा था। यौगंधरायण उसके सामने आकर खड़ा हो गया और जोर-जोर से हँसता चीखता बोला–
सुनो–सुनो, मैं महामंत्री यौगंधरायण हूँ। इस चण्डप्रद्योत ने हमारे राजा का अपहरण किया है। मैं उसे छुड़ाकर राजकुमारी वासवदत्ता के साथ लेकर जाऊँगा। ही.... ही.... ही....
कोई पागल है। भूताविष्ट जैसा लगता है। दो चाबुक मारकर छोड़ दो।
पागल ही.... ही.... करता थूकता, हँसता हुआ आगे निकल गया।

चण्डप्रद्योत ने बदला लेने के लिए छल करके अभयकुमार को भी बन्दी बनाकर उसे सम्मानपूर्वक उज्जयिनी में रोक रखा था।

चण्डप्रद्योत ने उदयन से कहा–
वत्स ! इतने दिन सुना ही था, आज तुम्हारी दिव्य वीणा का चमत्कार देखकर मैं तो गद्‌गद् हो गया। अब अपनी वीणा के अमृत स्वरों से उज्जयिनी की प्रजा को भी आनन्द विभोर कर दो।
महाराज की जैसी आज्ञा!
उदयन वासवदत्ता के पास आया और पूरी बात बताकर बोला–
सुन्दरी ! अबसर चूको मत। महाराज संगीत उत्सव की तैयारी में लगे हैं और हम कौशाम्बी प्रस्थान की तैयारी करें····
आर्य ! बिलकुल उचित समय है।
वासवदत्ता ने अपनी सखी कंचनमाला से कहा–
माला ! तैयारी करो, कल सूर्योदय से पहले ही हमें प्रस्थान कर देना है।
संध्या के समय महल के पीछे उदयन वसन्तक से मिला और कहा–
वसन्तक ! वेगवती हथिनी को तैयार रखो। कल ब्रह्म मुहुर्त्त में हम प्रस्थान कर देंगे।
दूसरे दिन उषाकाल में वसन्तक वेगवती हथिनी लेकर महलों के पीछे पहुँच गया। उदयन भी अपनी वीणा लेकर आ गया। वासवदत्ता भी कंचनमाला के साथ आ पहुँची।

हथिनी के पास पहुँचकर उदयन ने पूछा–
वसन्तक ! हथिनी के पीछे ये चार घड़े क्यों बाँध रखे हैं?
राजन् ! इनमें हथिनियों का मूत्र भरा है। यही अनिलगिरि हाथी को रोकने की एक मात्र दवा है।
हथिनी पर बैठकर जैसे ही वे जाने लगे। दूर खड़ा यौगंधरायण जोर-जोर से पुकारने लगा–
देखो उज्जयिनी के लोगो, उदयन वासवदत्ता के साथ जा रहा है। किसी की हिम्मत हो तो रोक लो?
पागल ! आज भी वही नाटक करने लगा।
परन्तु जब हथिनी सीमा के जंगलों के पास पहुँची तो कुछ पहरेदारों ने हथिनी पर बैठी वासवदत्ता और उदयन को देखा।
अरे, यह तो अपनी राजकुमारी और उदयन हैं।
तत्काल राजा को खबर दी–
महाराज ! राजकुमारी, उदयन के साथ हथिनी पर बैठकर अवन्ती की तरफ जा रही है।
क्या? इतना बड़ा छल ! मेरी बेटी मेरे साथ ही धोखा कर गई?

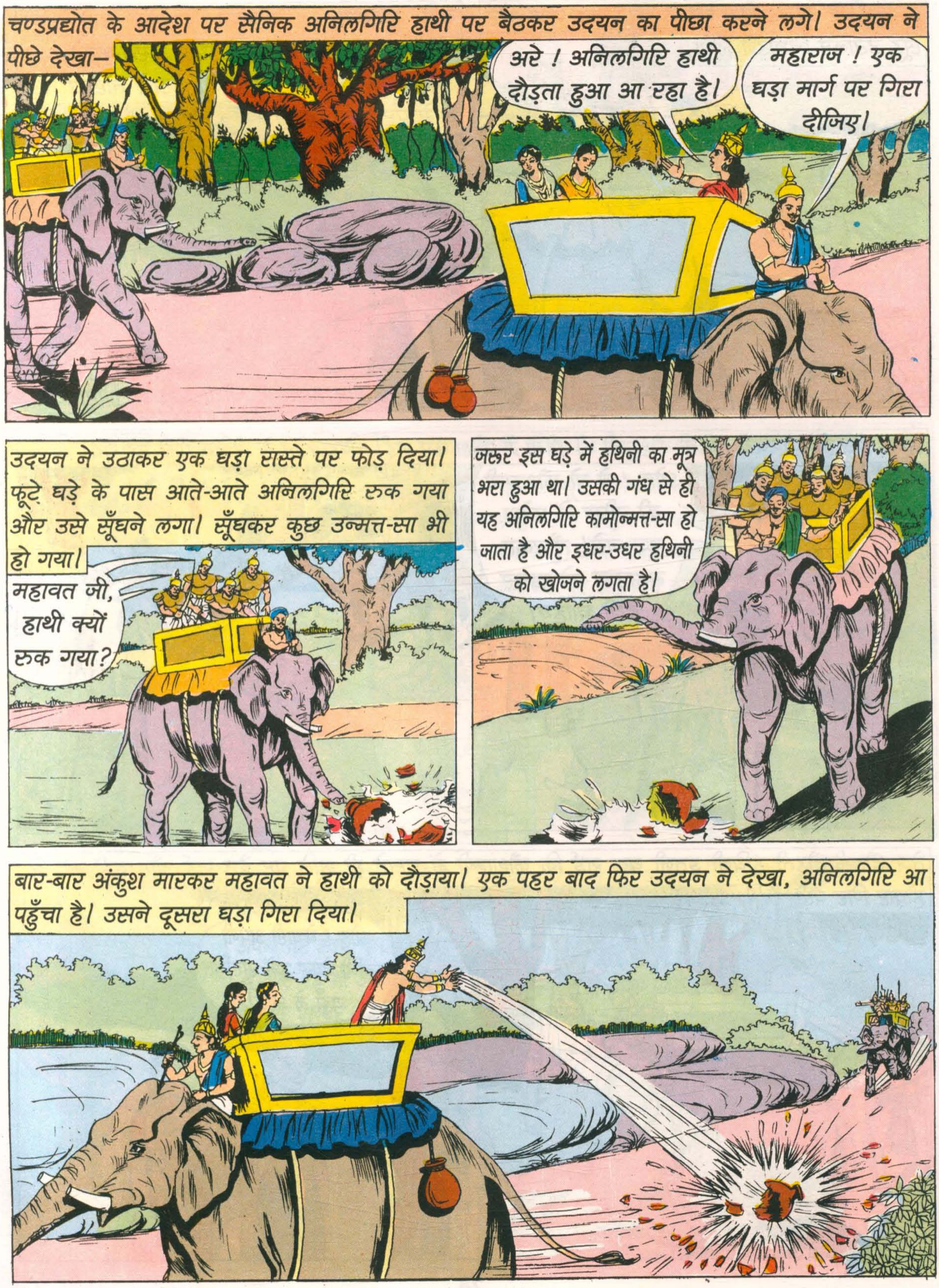
चण्डप्रद्योत के आदेश पर सैनिक अनिलगिरि हाथी पर बैठकर उदयन का पीछा करने लगे। उदयन ने पीछे देखा—
अरे ! अनिलगिरि हाथी दौड़ता हुआ आ रहा है।
महाराज ! एक घड़ा मार्ग पर गिरा दीजिए।
उदयन ने उठाकर एक घड़ा रास्ते पर फोड़ दिया। फूटे घड़े के पास आते-आते अनिलगिरि रुक गया और उसे सूँघने लगा। सूँघकर कुछ उन्मत्त-सा भी हो गया।
महावत जी, हाथी क्यों रुक गया?
जरूर इस घड़े में हथिनी का मूत्र भरा हुआ था। उसकी गंध से ही यह अनिलगिरि कामोन्मत्त-सा हो जाता है और इधर-उधर हथिनी को खोजने लगता है।
बार-बार अंकुश मारकर महावत ने हाथी को दौड़ाया। एक पहर बाद फिर उदयन ने देखा, अनिलगिरि आ पहुँचा है। उसने दूसरा घड़ा गिरा दिया।

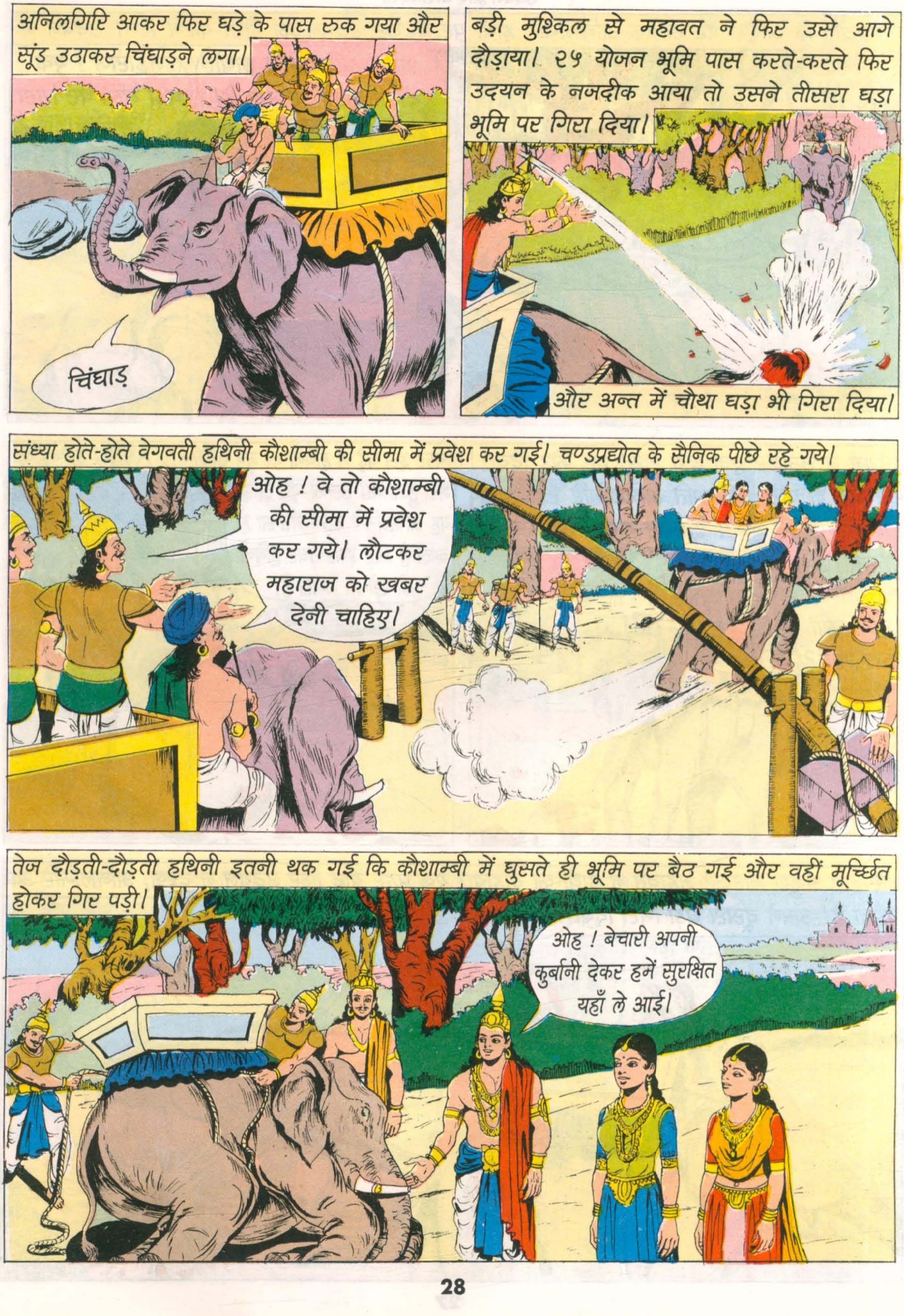

अनिलगिरि आकर फिर घड़े के पास रुक गया और सूंड उठाकर चिंघाड़ने लगा।
चिंघाड़
बड़ी मुश्किल से महावत ने फिर उसे आगे दौड़ाया। २५ योजन भूमि पास करते-करते फिर उदयन के नजदीक आया तो उसने तीसरा घड़ा भूमि पर गिरा दिया।
और अन्त में चौथा घड़ा भी गिरा दिया।
संध्या होते-होते वेगवती हथिनी कौशाम्बी की सीमा में प्रवेश कर गई। चण्डप्रद्योत के सैनिक पीछे रहे गये।
ओह ! वे तो कौशाम्बी की सीमा में प्रवेश कर गये। लौटकर महाराज को खबर देनी चाहिए।
तेज दौड़ती-दौड़ती हथिनी इतनी थक गई कि कौशाम्बी में घुसते ही भूमि पर बैठ गई और वहीं मूर्च्छित होकर गिर पड़ी।
ओह ! बेचारी अपनी कुर्बानी देकर हनें सुरक्षित यहाँ ले आई।

फिर दूसरे हाथी पर बैठकर उदयन आदि सकुशल नगर में प्रवेश कर गये।
लौटकर सैनिकों ने सारी घटना सुनाई तो चण्डप्रद्योत ने दाँत पीसते हुए कहा–
यह उस धूर्त्त यौगंधरायण की चाल है। उसी ने हम सबको मूर्ख बनाया है। सेना तैयार करके कौशम्बी पर आक्रमण करो।
मंत्रियों ने उसे समझाया–
महाराज ! अब युद्ध करने से क्या लाभ है? राजकुमारी ने अपना वर स्वयं चुन ही लिया है और वह भी उदयन जैसा वीर सुन्दर कलाकार।
राजपुरोहित ने भी कहा–
राजन् ! पुत्री की खुशी ही तो पिता की खुशी होती है। फिर आपको तो बिना परिश्रम किये ही इतना गुणी और वीर दामाद मिल गया।

सब के समझाने से चण्डप्रद्योत शान्त हो गया।
ठीक है ! आप सबका विचार उचित ही है। यदि मैं अपने हाथ से कन्यादान करता तो ज्यादा खुशी होती।
उसने राजपुरोहित को आदेश दिया–
अब कन्या और जंवाईराजा के लिए उपहार लेकर आप कौशाम्बी जाने की तैयारी कीजिए।
दो दिन बाद महामंत्री यौगंधरायण भी कौशाम्बी आ गया।
आइये महामंत्री जी मैं आपका इन्तजार कर रहा था।
महाराज की जय हो !
कौशाम्बी में उदयन-वासवदत्ता के विवाह उत्सव की तैयारियाँ होने लगीं। तभी उपहार आदि लेकर उज्जयिनी के कुलपुरोहित भी आ पहुँचे।
महाराज उद्यन की जय हो !

उज्जयिनीपति ने अपनी पुत्री के लिए यह उपहार भेजे हैं। कृपया स्वीकारें।
वासवदत्ता ने राजपुरोहित के चरण-स्पर्श किये।
उज्जयिनीपति महाराज चण्डप्रद्योत की ओर से आप दोनों के सुख-सौभाग्यमय जीवन की कामना करता हूँ।
उसी समय उद्यानपाल ने सूचना दी–
श्रमण भगवान महावीर विहार करते-करते कौशाम्बी के उद्यान में पधार रहे हैं।

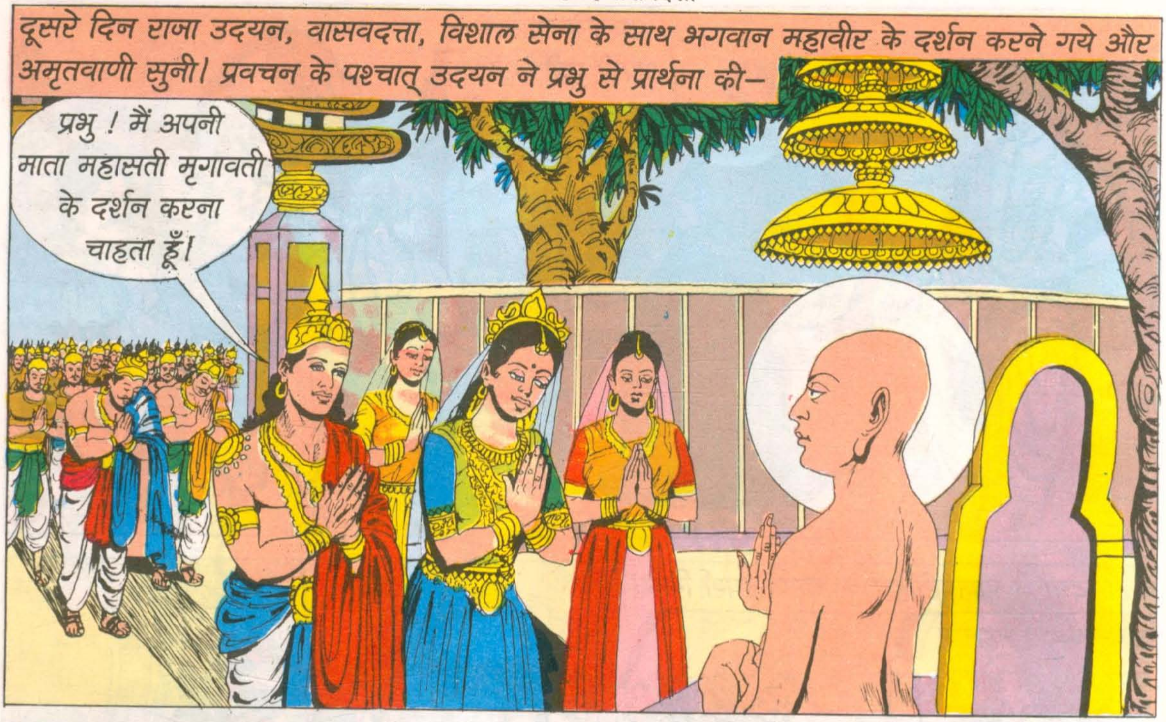

उदयन-वासवदत्ता दोनों ही साध्वी मृगावती के दर्शन करने गये। वहीं पर वासवदत्ता की माता साध्वी अंगारवती आदि भी विराजमान थीं। दोनों ने उनके दर्शन किये और धर्म शिक्षा प्राप्त की। उनकी धर्म शिक्षाओं के अनुसार अपना जीवन बिताते हुए दोनों ने ही जिनधर्म की आराधना कर जीवन सफल बनाया।

समाप्त

भगवान पार्श्वनाथ के प्रगट प्रभावक, असीम आस्थारूप, श्री उवसग्गहरं स्तोत्र की पावन अनुभूति करानेवाला, पोजीटीव एनर्जी के पावरहाउस समान, दिव्य और नव्य

पावनता का प्रतीक - पारसधाम.

- महानगरी मुंबई के हृदय समान घाटकोपर में **पूज्य गुरुदेव श्री नम्रमुनि म.सा.** प्रेरित ज्ञान, ध्यान और साधना का एक अनोखा आधुनिक तकनीकी द्वारा तैयार किया गया धाम... पारसधाम..!
- पारसधाम... एक ऐसा धाम, जहाँ परमात्मा पार्श्वनाथ के दिव्य परमाणु और पूज्य गुरुदेव की अखंड साधना शक्ति के अध्यात्मिक Vibrations प्रतिपल प्रेरणा के साथ परम आनंद और परम शांति की अनुभूति कराता है ।
- यहाँ मानवता की सपाटी से अध्यात्म के मोती तक की गहराई मिलती है ।
- यहाँ है महाप्रभावक श्री उवसग्गहरं स्तोत्र की प्रभावक सिद्धीपीठिका जो मनवांछित फल देती है..!
- यहाँ है ऐसी कक्षाएं जहाँ Look n Learn के बच्चे अध्यात्म ज्ञान प्राप्त करते हैं ।
- यहाँ है अध्यात्म ध्यान साधना की शक्ति का प्रतीकरूप पीरामीड साधना केन्द्र ।
- यहाँ है शांतिपूर्ण विशाल प्रवचन कक्ष जहाँ संतो के एक एक शब्द अंतर को स्पर्श करते हैं ।
- यहाँ है स्पीरीच्युअल शोप जहाँ उपलब्ध है अध्यात्म ज्ञान, साधना और प्रवचन आदि की पुस्तकें और C.D., V.C.D.
- यहाँ है एक अति आकर्षक आर्ट गैलेरी जहाँ आगम के रंगीन चित्रों की प्रदर्शनी आपके दर्शन को शुद्ध कर देगी ।

महाप्रभावक श्री उवसग्गहरं पार्श्वनाथ परमात्मा की स्तुति के अखंड आराधक **पूज्य गुरुदेव श्री नम्रमुनि म.सा.** की साधना के तरंगो से समृद्ध पारसधाम अध्यात्म की आत्मिक अनुभूति करानेवाला आधुनिक धाम है जो जैन समाज की उन्नति और प्रगति के लिए एक अनोखी मिसाल है ।

यहाँ के नीति और नियम भी अपने आपमें विशेष महत्त्व रखते हैं ।

यहाँ आनेवाली व्यक्ति को गुरुदर्शन और गुरुवाणी के लिए प्रथम 10 मिनिट ध्यान कक्ष में ध्यान साधना करके अपने मन और विचारों को शांत करना जरूरी है । तभी गुरुवाणी अंतरमे उतरेगी...!

मौन, शांति और अनुशासन यहाँ के मुख्य नियम हैं । यहाँ आनेवाले भक्तों का अनुशासन ही उनकी अलग पहचान है ।

पारस के धाम में पारस बनने कें लिए आईए पारसधाम..!

PARASDHAM

Vallabh Baug Lane, Tilak Road, Ghatkopar (E), Mumbai - 400 077. Tel : 32043232.

पूज्य गुरुदेव श्री नम्रमुनि म.सा. की प्रेरणा से प्रकाशित

JAIN EDUCATION BOARD

आगम आधारित हिन्दी Comics

प्रत्येक Comics अपनी एक मौलिक विशेषता के साथ प्रकाशित की जाती है।

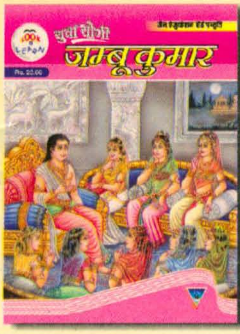

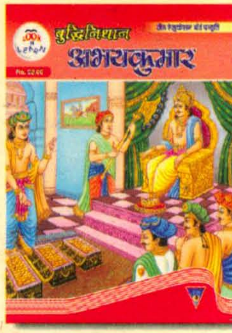

बच्चों के प्यारे गुरुदेव श्री नम्रमुनि म.सा.ने देखा कि आज के बच्चों को Comics पढ़ने में ज्यादा रूचि है। Comics हाथ में आते ही खाना पीना भी भूल जाते हैं और एक ही बार में, पूरी पुस्तक पढ़ लेते हैं।

यह देखकर बाल मनोविज्ञान के अभ्यासी पू. गुरुदेव ने सोचा अगर भगवान महावीर के आगम शास्त्र में जो दृष्टांत, सत्य घटना हैं उसे अगर Comics के रूप में प्रकाशित करें तो बच्चों को सहजता से जैनधर्म के आदर्श और वीर पात्रों के बारे में भी जानकारी मिल जायेगी। ऐसी उत्तम भावना से उन्होंने अब तक 30 Comics प्रकाशित करवाई हैं और इनकी सफलता देखकर और अनेक ऐसी Comics की पुस्तकें प्रकाशित करने के भाव हैं।

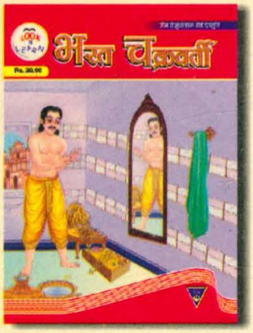

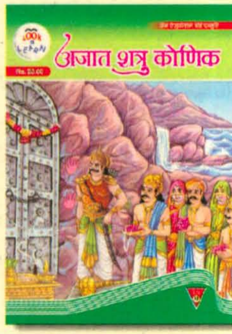

आगम के श्रेष्ठ पात्रों को बच्चों तक पहुँचाने का श्रेष्ठत्तम माध्यम है यह सचित्र साहित्य।

50 रूपये वाली ये सचित्र Comics दाताओ के अनुदान से और ज्ञान प्रसार के भाव से आप मात्र 20 रूपये में प्राप्त कर सकतें हैं।

शासन प्रभावक पूज्य गुरुदेव श्री नम्रमुनि म.सा. की प्रेरणा से लुक अेन लर्न जैन एज्युकेशन बोर्ड प्रस्तुत करता है निम्नलिखित सचित्र साहित्य..!

- बुद्धिनिधान अभयकुमार
- अजात शत्रु कोणिक
- भरत चक्रवर्ती
- पाँच रत्न
- क्षमादान
- युवा योगी जम्बू कुमार
- करनी का फल
- राजकुमार श्रेणिक

- रूप का गर्व
- वचन का तीर
- तृष्णा का जाल
- पिंजरे का पंछी
- महासती अंजनासुन्दरी
- महासती मदन रेखा
- धरती पर स्वर्ग
- सुर सुन्दरी

- भगवान मल्लीनाथ
- नन्द मणिकार
- उदयन वासवदत्ता
- कर भला हो भला
- सद्दाल पुत्र
- राजकुमारी चन्दनबाला
- करकण्डू जाग गया
- महाबल मलया सुन्दरी

- किस्मत का धनी धन्ना
- भगवान ऋषभदेव
- भगवान महावीर की बोध कथाएँ
- राजा प्रदेशी और केशीकुमार श्रमण
- आर्य स्थूलभद्र
- ऋषिदत्ता

पत्रिका मंगवाने के लिए सदस्यता शुल्क अर्हम युवा ग्रुप के नाम से चेक / ड्राफ्ट द्वारा निम्न पते पर भेजे।

LOOK N LEARN : PARASDHAM, TEL. : 022-32043232

Vallabh Baug Lane, Tilak Road, Ghatkopar (E), Mumbai - 400 077.